ब्रह्मज्ञान एवं तद्विषयक आधुनिक परिप्रेक्ष्य : एक समीक्षात्मक अध्ययन
(प्रस्थानत्रयी-शाङ्करभाष्य के सन्दर्भ में)

संस्कृत विषय में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी

श्रिया श्रीवास्तव

शोध निर्देशिका

डॉ० अनीता

असिस्टेंट प्रोफेसर

संस्कृत विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा – 282005

2025

धर्म जिज्ञासा में प्रवृत्ति के फलस्वरूप मानव अपने उच्चतम आदर्श एवं वास्तविक स्वरूप की प्राप्ति के लिए प्रेरित होता आया है। उसकी इसी उत्कण्ठा ने दर्शनशास्त्र को उद्भूत किया। दर्शन - **'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्'** अथवा **'दृश्यते इति दर्शनम्'।** 'दर्शन' का शाब्दिक अर्थ ही है परम सत्ता का साक्षात्कार करना।

वेद मूलक परम सत्ता के बोध में निहित प्रयोजन को भी दर्शनशास्त्र स्पष्ट रूप से रखता है। वस्तुतः सभी दर्शनशास्त्रों का उद्देश्य व प्रतिपाद्य विषय सम्पूर्ण दुःखों की ऐकान्तिक व आत्यन्तिक निवृत्ति रूपी मोक्ष प्राप्ति ही है। यही परमपुरुषार्थ है और जीवन का परमलक्ष्य। इसके निमित्त साधनीभूत तत्त्वज्ञान को विभिन्न दर्शनग्रन्थों में प्रमुख रूप से स्वीकारा है।

ब्रह्मज्ञान –

"ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते।" (गीता.13.18)

वैदिक काल से ही उस सत् ज्योति स्वरूप परमसत्ता को प्राप्त करने के लिए प्राणी प्रयत्नशील रहा है। **"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय।"** (बृ.उ.1.3.28)

वेद का भी वचन है -

"वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।" (यजु० 31/18)

इस श्रुति के द्वारा ब्रह्मसाक्षात्कार का ही मोक्ष हेतुत्व स्वीकार होता है। जिसके अतिरिक्त और कोई भी मार्ग नहीं है। ब्रह्मज्ञान समस्त शास्त्र ग्रन्थों में विभिन्न नामों से जाना गया है- तत्त्वज्ञान, ब्रह्मसाक्षात्कार, आत्मज्ञान, ब्रह्मविद्या, पराविद्या, तत्त्वदर्शन, राजविद्या, विवेकख्याति इत्यादि। 'ब्रह्म' शब्द 'बृहि वृद्धौ' धातु से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है- सर्वव्यापक। 'ज्ञान' शब्द 'ज्ञा' धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है- अवबोध, जानना(देखना), प्रत्यक्षानुभूति। अतः ब्रह्मज्ञान का अर्थ हुआ उस सत् चित् आनन्द रुप सर्वव्यापक सत्ता का अपरोक्ष साक्षात्कार करना। धर्मराजध्वरीन्द्र की उक्ति है-

"तदेवं ब्रह्मज्ञानान्मोक्षः स चानर्थनिवृत्तिर्निरतिशयब्रह्मानन्दाऽवाप्तिश्चेति सिद्धं प्रयोजनम्।"

आचार्य शङ्कर भी ब्रह्मज्ञान का फल बताते हैं- 'मोक्ष प्रतिबन्धक रूप अविद्या की निवृत्ति एवं ब्रह्मभाव की प्राप्ति।

वस्तुत: समस्त दर्शन ग्रन्थों का सार यह आत्मज्ञान ही है जो मोक्ष के प्रति साक्षात् हेतु है। यदि हम उपनिषद् व दर्शन

ग्रन्थों के प्रतिपाद्य विषय का अवलोकन करें तो हमें तीन आनुभविक सत्य दृष्टिगोचर होते हैं –

१) मनुष्य आधिदैविक, अधिभौतिक एवं आध्यात्मिक दुःखों से त्रस्त है।

२) वह दुःखों से मुक्ति चाहता है।

३) केवल दुःखों से मुक्ति ही नहीं अपितु शाश्वत शान्ति की प्राप्ति भी चाहता है।

उपाय स्वरूप वेद निःसृत दर्शन ग्रन्थ एक अद्वितीय सूत्र प्रस्तुत करते हैं **- "कारणनाशात् कार्यनाशः"**

कार्य - दुःख नाश , कारण - दुःखों की सत्ता

कार्य - दुःखों की सत्ता, कारण - संसार

कार्य - संसार (समस्त अनर्थ परम्परा) , कारण - आत्म विषयक अज्ञान

अतः दुःखों की निवृत्ति के लिए उनके मूलभूत कारण आत्म विषयक अज्ञान के नाश की प्रसक्ति होती है।

'आत्म विषयक अज्ञान का नाश - आत्म विषयक ज्ञान के द्वारा'।

इसलिए दर्शन ग्रन्थ मानव की उत्कृष्टतम जीवनशैली के परिचायक हैं, जो आत्मज्ञान का उपदेश कर मानवीय चिन्तन को अनुप्राणित कर रहे हैं।

अतः यह सतत् जिज्ञासा का विषय रहा है कि प्राचीन काल से महिमामण्डित यह आत्मज्ञान क्या ग्रन्थों तक ही पर्यवसित है? क्या आत्मज्ञान के प्राचीन विज्ञान का आधुनिक व्यक्ति के जीवन में कोई सार्थक स्थान है? यदि वह आत्मज्ञान जो शाश्वत है वह वर्तमान में उपयुज्य है, तो उसके प्राप्त्यर्थ क्या कार्यप्रणाली हो सकती है? क्या शास्त्रोद्दिष्ट कार्य प्रणाली ही वर्तमान में यथावत् है या समय परिवर्तन व सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप आत्मज्ञान प्राप्ति की कार्यप्रणाली में यथोचित् परिवर्तन आया है? निःसंदेह वेदान्त मोक्ष शास्त्र के रूप में प्रतिष्ठित है। क्या वेदोक्त व वेदान्तीय पद्धति का अनुसरण कर आज मनुष्य अपने चरम लक्ष्य व अपने अवसादों से मुक्त हो सकता है? क्या ऋषियों का यह शाश्वत विज्ञान आज समाज को वैदिकोत्कर्ष तक पुनः पहुंचा सकता है? इन सभी प्रश्नों पर चिन्तन आज समाज में ज्वलंत विषय के रूप में प्रस्तावित है।

शोध दृष्टि -

इन्हीं सब जिज्ञासाओं के समाधान भूत प्रयास मेरे द्वारा इस शोधप्रबंध में किए गए हैं। निःसंदेह आत्मज्ञान का स्वरूप शाश्वत है तथापि समय के अनुरूप उस तत्वज्ञान के प्राप्त्यर्थ कार्यप्रणाली में परिवर्तन आना स्वाभाविक है। वेदान्त शास्त्र के अध्ययन के आधार पर मेरे द्वारा सिद्धांत को प्रस्तुत करते हुए इस शोधप्रबंध में पांच बिंदुओं को दर्शाने का प्रयास किया गया है, जिनके द्वारा आत्मज्ञान प्राप्ति की कार्यप्रणाली को आज के सन्दर्भ में समझा जा सकता है :-

१) ब्रह्म सत्ता की आन्तरिक अभिगम्यता

२) ब्रह्मज्ञान द्वारा ही ब्रह्मसत्ता का बोध

३) दिव्य चक्षु की साधनता

४) गुरु की अनिवार्यता

५) ब्रह्मज्ञान द्वारा ही सर्वस्तरीय परिवर्तन व समाज उत्थान।

प्रस्थानत्रयी –

भारतीय दार्शनिक चिन्तनधारा की चरम परिणति व ज्ञान की पराकाष्ठा वेदान्त दर्शन में है। वेदान्त दर्शन जिसमें प्रतिष्ठित है अथवा जिसके द्वारा प्रतिष्ठित है वह प्रस्थान कहलाते हैं। वेदान्त में श्रुति, स्मृति व न्याय रूप शास्त्र प्रस्थान कहलाते हैं।

- वेदान्त का परमप्रमाणभूत उपनिषद् ग्रन्थ श्रुति प्रस्थान हैं।
- आध्यात्मिक भावना प्रधान श्रीमद्भगवद्गीता जो स्वयं परमपुरुष वासुदेव द्वारा समुद्दिष्ट है वेदान्त का स्मृति प्रस्थान है।
- श्री बादरायण व्यासकृत ब्रह्मसूत्र वेदान्त का न्याय प्रस्थान है।

इन त्रय का समन्वित रूप प्रस्थानत्रयी के नाम से बोध्य है जो भारतीयदर्शन धारा में आत्मस्वरुप का प्रधान परिचायक है।

अद्वैतवेदान्त –

'न विद्यते द्वैतं यस्मिन् तत् अद्वैतम्' अथवा 'न द्वैतम् इति अद्वैतम्'। अतः 'अद्वैत' शब्द का अर्थ है - दो पदार्थों के अस्तित्व

का अभाव या द्वितीयत्व का अभाव, जो इस श्लोक द्वारा स्पष्ट है -

“ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः।

अनेन वेद्यं सच्छास्त्रमिति वेदान्तडिण्डिमः ।।20।।” (ब्रह्मज्ञानावलीमाला)

एकमात्र सर्वात्म ब्रह्म ही त्रिकालाबाधित सत्य है। **"सत्यं नाम यत्स्यात् सर्वत्र सर्वदा"**। नामरुपात्मक यह जगत् मिथ्या है।

"संसारः स्वप्नतुल्यो हि रागद्वेषादिसंकुलः।

स्वप्नकाले सत्यवद्भाति प्रबोधेऽसत्यवद्भवेत्।।6।।" (आत्मबोध)

तथा जीव परमार्थतः ब्रह्म ही है। जीव एवं ब्रह्म के अभेदानुभव का नाम मोक्ष है, जिसमें अद्वैतब्रह्मसाक्षात्कार कारणीभूत है।

प्राक्तन कार्य सर्वेक्षण –

विषय चयन करने से पूर्व जानकारी के लिए मैंने विविध विश्वविद्यालयों के ग्रन्थालयों, शोध प्रबन्ध, इंटरनेट, शोधगंगा, आदि का गहन अन्वेषण किया। उपनिषद्, भगवद्गीता, ब्रह्मसूत्र में जो भी शोधकार्य हुए हैं, वे एकाकि ग्रन्थों पर आधारित हैं । जबकि अद्वैत वेदान्त की पूर्णता प्रस्थानत्रयी में निहित है। साहित्यिक सर्वेक्षण के दौरान कुछ ऐसे शोधप्रबंध प्राप्त हुए जिनमें ब्रह्मज्ञान के स्वरूप पर द्वितीयक रूप से विचार किया गया है किन्तु स्वातन्त्र्य पूर्वक प्रस्थानत्रयी शाङ्करभाष्य के सन्दर्भ में वेदान्तिक दृष्टि से एवं ब्रह्मज्ञान प्राप्ति की आधुनिक समय में कार्यप्रणाली व प्रासङ्गिकता को लेकर कोई कार्य मेरे संज्ञान में नहीं आया है। अतः मैंने **"ब्रह्मज्ञान एवं तद्विषयक आधुनिक परिप्रेक्ष्य : एक समीक्षात्मक अध्ययन (प्रस्थानत्रयी-शाङ्करभाष्य के सन्दर्भ में)”** इस विषय का चयन किया है।

उद्देश्य –

१) भारतीय चिन्तनधारा तथा ज्ञानप्रणाली की उन्नत समझ।

२) तत्वज्ञान का मौलिक स्वरूप, प्रमाणिकता, प्रायौगिक व वैज्ञानिक कार्यप्रणाली पर विचार।

३) 'ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठितम्' की समीक्षा।

४) गुरूपसदन विधान एवं गुरु की प्रमाणिकता पर विचार।

५) आधुनिक समय की भ्रामक ध्यान पद्धतियों की समीक्षा।

६) ब्रह्मज्ञान का शाश्वत विज्ञान जन साधारण के लिए सुलभ- शास्त्रदृष्टि से मूल्यांकन करना।

७) ब्रह्मज्ञान की आधुनिक युग में प्रासङ्गिकता, प्रभाव व आवश्यकता इत्यादि विषयों का विश्लेषण करना ही इस शोधप्रबंध के उद्देश्य हैं ।

शोध प्रविधि – यह शोध एक व्यापक, आगमनात्मक एवं वर्णनात्मक दार्शनिक शोध है, जिसमें विचाराधीन प्रमुख प्रश्नों के सन्दर्भ में अवधारणाओं का विवरण, विश्लेषण, मूल्यांकन इत्यादि प्रक्रियाओं का अनुसरण करके विचार किया जाएगा।

ब्रह्मज्ञान एवं तद्विषयक आधुनिक परिप्रेक्ष्य : एक समीक्षात्मक अध्ययन (प्रस्थानत्रयी-शाङ्करभाष्य के सन्दर्भ में)

प्रथम अध्याय :- भारतीय दर्शनशास्त्र एवं प्रस्थानत्रयी का परिचय

१) भारतीय दर्शन : उद्भव एवं विकास

२) वेदान्त दर्शन : विचारधारा एवं परम्परा

३) प्रस्थानत्रयी : (क) उपनिषद् का संक्षिप्त परिचय :-

ईशोपनिषद्, केनोपनिषद्, कठोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, ऐतरेयोपनिषद् , छान्दोग्योपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद् तथा श्वेताश्वतरोपनिषद्।

(ख) भगवद्गीता का संक्षिप्त परिचय

(ग) ब्रह्मसूत्र का संक्षिप्त परिचय

द्वितीय अध्याय :- आचार्य शङ्कर एवं शाङ्कर वेदान्त

१) आचार्य शङ्कर एवं उनकी कृतियां

२) अद्वैत वेदान्तीय प्रमाणमीमांसा एवं तत्त्वमीमांसा

३) आचार्य शङ्कर का वेदान्त दर्शन को योगदान

तृतीय अध्याय :- प्रस्थानत्रयी-शाङ्करभाष्य में ब्रह्म-स्वरूप एवं ब्रह्मज्ञान-प्राप्ति-साधन विमर्श

१) प्रस्थानत्रयी-शाङ्करभाष्य में ब्रह्म का स्वरूप

२) शाङ्कर वेदान्त में ईश्वर-जीव स्वरूप एवं सत् -मिथ्या की अवधारणा

३) ब्रह्म की स्थानीय अभिगम्यता प्रस्थानत्रयी-शाङ्करभाष्य के आधार पर

४) प्रस्थानत्रयी-शाङ्करभाष्य में ब्रह्मज्ञान प्राप्ति साधनों में विप्रतिपत्ति विमर्श

चतुर्थ अध्याय :- प्रस्थानत्रयी-शाङ्करभाष्य में ब्रह्मज्ञान का स्वरूप एवं मोक्ष-स्वरूप विवेचन

१) प्रस्थानत्रयी-शाङ्करभाष्य में ब्रह्मज्ञान की अवधारणा

२) ब्रह्मज्ञान की शाश्वतता एवं वैज्ञानिकता

३) शाङ्कर वेदान्त में चेतना का स्वरूप

५) प्रस्थानत्रयी-शाङ्करभाष्य के आधार पर मोक्ष-स्वरूप एवं मोक्षार्थ ज्ञानहेतुत्व विवेचन

पञ्चम अध्याय :- प्रस्थानत्रयी-शाङ्करभाष्य में ब्रह्मानुसन्धानार्थ गुरूपसत्ति एवं वेदान्तशास्त्र का व्यवहारिक पक्ष

१) गुरु शब्द अभिधेयार्थ एवं ब्रह्मज्ञानार्थ गुरूपसदन विधान

२) वेदान्तशास्त्र का केन्द्र : साक्षात्कार

३) ब्रह्मज्ञान के उपरान्त औपनिषदिक् परिवर्तन (मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक इत्यादि)

उपसंहार :-

समाज उत्थान के लिए ब्रह्मज्ञान की उपादेयता एवं वर्तमान में उसकी प्रासङ्गिकता |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ :-

१) ईशादि नौ उपिनषद्, शाङ्करभाष्यार्थ, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2068.

२) बृहदारण्यकोपिनषद्, सानुवाद शांकरभाष्यसहित, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2068.

३) छान्दोग्योपिनषद्, सानुवाद शांकरभाष्यसहित, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2068.

४) ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्य, सत्यानन्दी हिन्दी टीका, गोविन्दमठ, वाराणसी, विक्रम् संवत् 2040.

६) श्रीमद्भगवद्गीता, शाङ्करभाष्य हिन्दी-अनुवाद सहित, अनु. हरिकृष्णदास गोयन्दका, गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत 2067

सहायक ग्रन्थ सूची :-

१) भारतीय दर्शन, बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा ओरियन्टल, वाराणसी, 1979.

२) उपिनषदों के निर्वचन, वेदवती वैदिक, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, सं. 2003.

३) भारतीय दर्शन का इतिहास भाग 1 & 2, एस.एन.दासगुप्त, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2012

४) अद्वैतवेदान्त इतिहास तथा सिद्धान्त, डॉ. राममूर्ति शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1972.

५) सर्वदर्शन संग्रह, उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्भा विद्याभवन, दिल्ली

६) वेदान्तसार: (श्रीसदानन्दप्रणीत:), आचार्य बदरीनाथशुक्ल, मोतीलाल बनारसीदास,दिल्ली,1993.

७) वेदान्तपरिभाषा, गजानन शास्त्री मुसलगांवकर, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी।

८) वेदान्त-दर्शन (ब्रह्मसूत्र) व्या.हरिकृष्णदास गोयन्दका, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं.2066.

९) केनोपिनषद्, शाङ्करभाष्य हिन्दी अनु. रामकृष्ण मठ, नागपुर।

१०) अपरोक्षानुभूति, शंकराचार्य, गीता प्रेस, गोरखपुर।

११) योगी कथामृत, परमहंस योगानन्द, योगदा सत्संग सोसायटी, 2013.

१२) God talks with Arjuna, Paramhans Yogananda, yogda satsang society of India, 2021

१३) उपदेशसाहस्री, गजानन शास्त्री मुसलगॉवकर, महेश अनुसन्धान संस्थान, वाराणसी,1988.

१४) विवेकचूड़ामणि, डॉ.मृदुल कीर्ति, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 2019

१५) ज्ञानयोग, स्वामि विवेकानन्द, अद्वैत आश्रम उत्तराखंड, 2014

१६) आत्मबोध, श्रीशङ्कराचार्य, स्वामी हर्षानन्दपुरी, श्री रामकृष्ण मठ, 2014

१७) विवेक-चूड़ामणि, डॉ.मृदुल कीर्ति, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 2019

१८) ब्रह्मज्ञानावलीमाला, स्वामी निश्चलानंद सरस्वती, स्वस्ति प्रकाशन संस्थान पुरी, 2009

शब्दकोष :-

१) वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत-हिन्दी कोश, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली, 1969.

२) डॉ श्रीधरभास्करवर्णेकर, संस्कृतवाङ्मयकोश, ग्रन्थकार खण्ड, लोकभारती प्रकाशन, 2015.

३) अमरकोष, व्या. डॉ ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, रत्नप्रभाव्याख्या सहित, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, 2000.

पत्र-पत्रिकाएं :-

१) विश्वसंस्कृतम्, प्रो.इन्द्रदत्त उनियाल, विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्कृत शोध संस्थान।

२) अर्वाचीन संस्कृत माला , डॉ रमाकांत शुक्ल, देववाणी परिषद्।

Websites :-

https://shodhganga.inflibnet.ac.in

https://archive.org/details/booksbylanguage_sanskrit

https://www.sanskrit.nic.in/sanskrit_vimarsah.php